गांधी प्राणी उद्यान

नगर निगम ग्वालियर

वार्षिक प्रतिवेदन – 2017

0751-2438344,2438247 M-9826506781, gandhizoologicalpark1920@gmail.com

वार्षिक प्रतिवेदन

2017

गांधी प्राणी उद्यान,

नगर पालिक निगम, ग्वालियर

अनुक्रमणिका

- आयुक्त का प्रतिवेदन 1
- गांधी प्राणी का परिचय 2
- चिड़ियाघर के उद्देश्य 3
- उपलब्धियाँ एवं घटनायें 4
- वन्य जीव स्वास्थ्य परीक्षण 5
- प्रशिक्षण 6
- वृक्षारोपण 7
- रेन वाटर हार्वेस्टिंग 8
- शैक्षणिक गतिविधियाँ 9
- पशु रोगों की देखभाल एवं सफाई 10
- मास्टर प्लान 11
- विकास कार्य 12
- आधुनिकीकरण की यात्रा 13

आयुक्त का प्रतिवेदन

19 वीं शताब्दी में मेनेजिरी के रूप में निर्मित होने के बाद 21 वीं शताब्दी के वन्यजीव संरक्षण केन्द्र में तब्दील होते जा रहे गांधी प्राणी उद्यान का मध्यप्रदेश में वन्यजीव संरक्षण एवं वन्य जीवों के प्रति जन चेतना के लिये जन–समुदाय को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है।

नगर निगम द्वारा जनहित में इस चिड़ियाघर का 1921 से संचालन किया जा रहा है लेकिन नवीन चिड़ियाघर नीति के अंगीकृत होने के बाद से इस चिड़ियाघर में शिक्षा, संरक्षण, शोध जैसे महत्वपूर्ण कार्यो का बीड़ा उठाया गया है, उक्त लक्ष्यों को पूर्ण करने में केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण नई दिल्ली द्वारा नगर निगम को भरपूर सहयोग दिया जा रहा है। इस हेतु केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण द्वारा गांधी प्राणी उद्यान के वन्य प्राणियों को उनके प्राकृतिक पर्यावरण के अनुकूल सुविधाओं हेतु तकनीकि मार्गदर्शन एवं आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है जिसके लिये प्राधिकरण धन्यवाद का पात्र है।

विनोद कुमार शर्मा IAS
आयुक्त
नगर निगम ग्वालियर

गांधी प्राणी उद्यान एक परिचय

गांधी प्राणी उद्यान ग्वालियर शहर के हद्यस्थल तथ सबसे बड़े हरित क्षेत्र फूलबाग में स्थित है। यह स्थान रेलवे तथा बस स्टेण्ड से 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। किले की तलहटी में वृक्षों की सैंकड़ों प्रजातियों से आच्छादित फूलबाग का यह हिस्सा ग्वालियर शहर के तीनों उपनगर लश्कर, ग्वालियर, एवं मुरार को जोड़ता है।

प्रदेश का प्राचीनतम् चिड़ियाघर होने के साथ–साथ ग्वालियर, चम्बल, सागर, मालवा, विंध्य क्षेत्र एवं उत्तर प्रदेश के आगरा से लगा है तथा राजस्थान के मध्यप्रदेश से लगे शहरों के पर्यटकों एवं विद्यार्थियों के लिये पर्यावरण एवं वन्यजीव विज्ञान की एक मात्रा प्रयोग शाला है।

भू–जैविक दृष्टि से गॉधी प्राणी उद्यान ग्वालियर में सेन्ट्रल इंण्डिया हाईलैण्ड में पाये जाने वाले प्रायः सभी लुप्तप्राय वन्यजीव संरक्षित हैं।

इतिहास–

मानव तथा वन्यजीवों का नाता सदियों पुराना है। प्राचीन भारतीय इतिहास में अरण्यों अभ्यरणों का उल्लेख देखने को मिलता है। 19 वीं शताब्दी में लगभग सभी प्रमुख साम्राज्यों के राजा महाराजाओं द्वारा वन्य जीव जंतुओं को पालने की परंपराऐं रहीं। इस परंपरा के निर्वहन के लिये राज परिवारों द्वारा अम्यरणों तथा चिड़ियाघरों की स्थापनाऐं की गईं। भारत का प्रथम चिड़ियाघर 1854 में कलकत्ता मारबल पैलेस के नाम से राजा राजेन्द्र मलिक बहादुर द्वारा अपने निज निवास में बनाया गया। इसके बाद इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुये 1855 में मद्रास प्राणी उद्यान की स्थापना की गई। 1857 में त्रिवेद्रम, 1863 में बम्बई एवं जूनागढ़ 1889 में बढ़ौदा एवं 1892 में मैसूर में चिड़ियाघर का निर्माण किया गया। इनमें से मद्रास चिड़ियाघर नगर निगम द्वारा बनाया गया। शेष सभी चिड़ियाघर राजघरानों की सम्पत्ति थे। 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत के इस प्राचीनतम प्राणी उद्यान का निर्माण 1902 में तत्कालीन ग्वालियर नरेश महाराजा माधव राव सिंधिया ने कराया था। उन्होनें अपने

महल के इस महत्वपूर्ण हिस्से में दुनियॉ भर के वन्यजीवों को एकत्रित कर एक लघु चिड़ियाघर का रूप दिया। प्रारंभ में इस चिड़ियाघर का लाभ केवल शाही मेहमान ही उठा पाते थे। लेकिन 1921 में लखनउ में प्रिंस ऑफ वेल्स प्राणी उद्यान बनने के बाद तत्कालीन महाराजा माधवराव सिंधिया द्वारा यह चिड़ियाघर ग्वालियर की जनता को समर्पित कर दिया गया तथा 1922 में जार्ज पंचम के ग्वालियर आगमन के अवसर पर इसे किंग जार्ज चिड़ियाघर नाम दिया गया। तब से इस प्राणी उद्यान का संचालन नगर निगम ग्वालियर द्वारा किया जा रहा है। स्वतंत्राता के पश्चात यह गॉधी प्राणी उद्यान के नाम से जाने जाना लगा। इस प्रकार 20 वीं शताब्दी के प्रथम चरण में भारत में बनाये गये 6 प्रमुख चिड़ियाघरों नागपुर–1905, लखनउ, ग्वालियर–1921, उदयपुर–1935 तथा बीकानेर और जोधपुर–1936 में से एक था। वर्तमान में केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण द्वारा निर्धारित मापदण्डों के आधार पर इसमें उपलब्ध दुर्लभ वन्यजीवों के प्रजातियों की संख्या, क्षेत्राफल के आधार पर इसे मध्यम श्रेणी के चिड़ियाघरों में रखा गया है। मध्यप्रदेश में चिड़ियाघर ऑदोलन अत्यंत कमजोर है। भारत का भौगोलिक रूप से सबसे बड़ा प्रदेश होने के बावजूद आज भी प्रदेश में केवल तीन बड़े चिड़ियाघर हैं जिनमें से सबसे अधिक प्रजातियों का संरक्षण करने में गॉधी प्राणी उद्यान अग्रणी है लेकिन पर्यावरण के प्रति लोगों को शिक्षित करने के लिये अब इस प्राणी उद्यान के दायित्व बढ़ गये हैं ।

चिड़ियाघर के उद्देश्य

1—वन्यजीवों का संरक्षण।
2—लुप्तप्राय प्रजातियों का प्रजनन कराकर उनके प्राकृतिक निवास स्थल में खुला छोड़ना।
3—जनसामान्य को पर्यावरण एवं वन्यजीव संरक्षण के प्रति शिक्षा प्रदान कर जागरूक बनाना।
4—स्थानीय जनता को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करना।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये इस चिड़ियाघर द्वारा निम्न पद्धतियाँ अपनाई जा रही है :—

1—स्लोथ बियर, चिंकारा, कृष्ण मृग, मगर, घड़ियाल इत्यादि प्रजातियों की प्राथमिकता के आधार पर प्रजनन करा कर उन्हें उनके प्राकृतिक निवास स्थल में छोड़ने के प्रयास किये जारहे है। इस सम्बंध में राज्य शासन के प्रमुख वन्यजीव अभिरक्षक से अनुमति मॉगी गई है अनुमति प्राप्त होते ही जीवाजी विश्व विद्यालय के सहयोग से यह कार्यक्रम प्रारंभ किया जायेगा।

2—विभिन्न शैक्षणिक आयोजनों यथा वन्यप्राणी सप्ताह, विश्व पर्यावरण दिवस, चिड़ियाघर सप्ताह, जीव जन्तु कल्याण पखवाड़ा का आयोजन कर तथा उसमें जन सामान्य विशेषकर छात्राों तथा शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित कर वन्यजीव संरक्षण के प्रति शिक्षा का प्रचार प्रसार किया जारहा है।

3—आयोजनों तथा सामान्य दिवसों में भी विशेष रूचि रखने वाले छात्रा एवं शिक्षक समूहों को सेमीनार , व्याख्यानमाला, तथा व्यवहारिक भागीदारी और प्रकाशित ज्ञानवर्धक सामग्री का वितरण कर वन्यजीव संरक्षण के प्रति जागरूक बनाया जा रहा है।

4—गॉधी प्राणी उद्यान में आने वाले दर्शकों के मन में वन्यप्राणियों के प्रति सहानुभूति तथा उनके संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन बनाये रखने में

वन्यप्राणियों की भूमिका को समझााने के लिये प्रत्येक वन्यजीव के वाड़े पर वन्यजीव के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान करने वाली जानकारी प्रदर्शित की गई है। मार्ग दर्शक के रूप में स्वयं सेवी छात्रा उपलब्ध हैं, केन्टीन की व्यवस्था है, एक सोविनियर शॉप तथा दर्शक जानकारी केन्द्र की स्थापना की गई है।

5–प्राणी उद्यान को प्रभावी शिक्षण केन्द्र बनाने पर बल दिया गया है। इसके लिये स्कूल तथा कॉलेज के बच्चों को प्राणी उद्यान की विभिन्न गतिविधियों से जोड़ा गया। भविष्य में बच्चों को वन्यजीवों के संरक्षण की शिक्षा देने के लिये ऑडियो विज्युअल पद्धति प्रारंभ की जारही है। वर्तमान में यह कार्य कमप्यूटर तथा इंटरनेट के माध्यम से किया जा रहा है।

6–चिड़ियाघर के विकास के लिये एक दीर्घकालीन मास्टर प्लान तैयार किया गया है जिसके अन्तर्गत वर्तमान वन्यजीव वाड़ो का नवीनीकरण कर उन्हें प्राकृतिक निवास स्थलों जैसा बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिये एनवायरमेण्ट एनरिचमेंट पद्धति को अपनाया जा रहा है। जिसके तहत सभी बाड़ों में आवश्यकता अनुसार लैण्ड स्केपिंग की जारही है ताकि वन्यजीवों को यथा संभव प्राकृतिक वातावरण प्राप्त हो सके।

उपलब्धियां एवं घटनायें

वर्तमान में गांधी प्राणी उद्यान में लगभग 500 वन्य जीव है। जिसमें से 24 प्रजाति के वन्य प्राणी, वन्य जीव संरक्षण अधिनियम की कंडिका 1 के अंतर्गत आते हैं। चिडियाघर में केन्द्रीय चिडियाघर प्राणिकरण के सहयोग से विगत वर्षो में पेंथर, हिमालयन भालू, रीसस बंदर, वोनट बंदर, लॉयन, वुल्फ, हाइना, मगर, घडियाल, ईमू, सफेद मोर, देशी भालू के एन्क्लोजर बनाये गये है तथा लॉइन एवं टाइगर एन्क्लोजर का आधुनिकीकरण का कार्य किया जा चुका है। केन्द्रीय चिडियाघर प्राधिकरण द्वारा अभी तक चिडियाघर को एक करोड चौरासी लाख रू. अनुदान के रूप में प्रदान किये गये है का शत प्रतिशत अनुदान जैकाल, चिंकारा, लंगूर, ब्लैकवक, आदि के अत्याधुनिक एन्क्लोजर बनाने के लिये प्रदान कर उक्त एनक्लोजरों का निर्माण कार्य किया जा चुका है। उक्त निर्माण कार्य के अतिरिक्त चिडियाघर के प्रमुख वन्य जीवों के एन्क्लोजरों मे स्क्वीज–केज लगाने व अस्पताल को आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित करने के लिये 5 लाख 36 हजार रू0 का अनुदान दिया गया। उक्त अनुदान से टाइगर, लॉइन के एन्क्लोजर में स्क्वीज केज स्थापित किये जा चुके है , शेष वन्य जीवों के केजों में स्क्वीज केज का निर्माण कार्य भी कराया जा चुका है। केन्द्रीय चिडियाघर प्राधिकरण द्वारा चिडियाघर की जल समस्या के निदान के लिये भी 15 लाख रू0 अनुदान के रूप में दिये गये, प्राप्त अनुदान से एक लाख गैलन क्षमता की ओवर हैड टैक का निर्माण किया गया। चिड़ियाघर परिवार में केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के सहयोग व स्वीकृति से नैनीताल से एक मादा भालू, रायपुर से एक नर बब्बर शेर, पुणे से देशी भालू नर , नई दिल्ली से हिप्पो, रेड जंगल फाउल, जैकॉल, ईमू तथा चेन्नई से शुतुरमुर्ग आदि वन्य प्राणियों की संख्या में वृद्धि हुई तथा रायपुर जू से जंगली सूअर मादा टाइगर तथा हनुमान लंगूर लाकर वन वैभव में वृद्वि की गयी।

जन्म–मृत्यु –

जन्म की अधिकता एवं मृत्यु के प्रतिशत में कमी किसी चिडियाघर के भविष्य को निर्धारित करती हैं। गांधी प्राणी उद्यान में विगत दो वर्षो से चिंकारा, कृष्णमृग, वार्किग डियर, चीतल, सांभर के प्रजनन में

अच्छी सफलता अर्जित की हैं। मगर , जो प्राणी उद्यान के गत 20 वर्षो से छोटे एन्क्लोजर में रहने के कारण सफलता पूर्वक प्रजनन नही कर पा रहे थे। गत वर्ष जैसे ही मगर को अत्याधुनिक एन्क्लोजर में छोडा गया तब उन्हे प्राकृतिक वातावरण मिलने से 20 वर्षो में पहली बार प्राणी उद्यान के मगर सफलतापूर्वक प्रजनन कर लगभग 25–30 अण्डे दिये। जिसमें से 20 बच्चे पैदा हुये। इस वर्ष उद्यान के सिल्वर फिजेंट नामक पक्षी के द्वारा भी अण्डे दिये गये और उसमें से 2 बच्चे पैदा हुये। पेटेड स्टार्क नामक पक्षी के 05 बच्चे पैदा हुऐ। विगत वर्ष प्राणी उद्यान के अधिकांश लुप्तप्रायवन्य जीवों को आधुनिक वातावरण दिये जाने से प्राणी उद्यान के जीवों की मृत्यु दर में कमी आई है। विशाखापट्नम में आयोजित प्राणी उद्यान संचालको की बैठक में चिडियाघर की लगातार कम हो रही मृत्यु दर पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

प्राणी उद्यान के चिंकारा, मगर, घड़ियाल, सांभर, कवर बिज्जू, चीतल, नीलगाय, वार्किग डियर के परिवार में तेजी से वृद्वि हुई।

वर्ष 2011 में दिल्ली चिड़ियाघर से विनिमय अंतर्गत लाई गई मादा टाइगर से प्रजनन उपरांत सफलतापूर्वक 02 नर टाइगर से चिड़ियाघर परिवार में वृद्धि हुई। वर्ष 2014 मे पुनः तीन शावको का जन्म हुआ मादा तथा तीनो बच्चे पूर्णतः स्वास्थ्य है इन्ही बच्चो मे से अनुमति प्राप्त कर एक मादा टाईगर विनिमय अर्न्तगत रायपुर प्राणी उघान को देकर वहा से मादा टाईगर प्राप्त की गई।

विलुप्त प्राय रैस्क्यूड गिद्व द्वारा भी अण्डे दिये गये जिसे चिडियाघर प्रबंधन की देख रेख मे सफलता पूर्वक बच्चा प्राप्त हुआ।

टीकाकरण –

प्राणी उद्यान के वन्य जीवों का प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी टीकाकरण कराया गया। उक्त टीकाकरण जबलपुर महाविद्यालय के डॉ. ए.बी. श्रीवास्तव के संरक्षण में किया गया। केन्द्रीय चिडियाघर प्राणिकरण तथा अन्य वैज्ञानिक संस्थाओं द्वारा , फेलाइन ल्यूकोपीनीया नामक बीमारी फैलने की आशंका बताई गई। उक्त आंशकाओं से निपटने के लिये सभी कार्निबोर वन्य जीवों का सघन टीकाकरण किया गया।

वन्य जीव स्वास्थ्य परीक्षण –

वर्ष 2015 में वन्य जीवो का सघन स्वास्थ्य परीक्षण जबलपुर महाविद्यालय के डॉ. ए.बी. श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में किया गया। उक्त शिविर के दौरान वन्य प्राणियो का रक्त परीक्षण तथा रक्त जनित बीमारियों की जांच की गई। शाकाहारी वन्य जीवों के भी एक्टो तथा एन्डोंपैरासाइट की जांच, मल–मूत्र की जांच की गईं। उक्त शिविर में संयुक्त संचालक पशु चिकित्सा ग्वालियर की टीम ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

प्रशिक्षण –

प्राणी उद्यान द्वारा केन्द्रीय चिडियाघर प्राणिकरण के सहयोग गांधी प्राणी उद्यान के पशु चिकित्सक डॉ. उपेन्द्र यादव को नई दिल्ली में वन्य जीवों पर आधारित 05 दिवसीय प्रशिक्षण दिलाया गया साथ ही मगर संरक्षण पर जीवाजी यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित कार्यशाला में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया गया इसके साथ ही श्री भागचन्द कुन्दवानी, श्री अविनाश घोरपड़े व श्री गौरव परिहार को जू–मैनेजमेन्ट का सुपरवाईजर लेवल का प्रशिक्षण सी.जेड.ए., नई दिल्ली द्वारा दिया गया तथा प्राणी उद्यान के एनीमल कीपर श्री राजेश, श्री रिन्कू, श्री उमाचरण, श्री शिवकुमार पाल, श्री अनुराग, श्री अशोक को जू कीपर स्तर का प्रशिक्षण कानपुर तथा अन्य प्राणी उद्यान में दिलाया गया। उक्त प्रशिक्षण के उपरांत प्राणी उद्यान में अभी तक 70 प्रतिशत अधिकारी सुपरवाईजर तथा कीपर लेवल का स्टाफ प्रशिक्षित हो चुका है।

वृक्षारोपण –

प्राणी उद्यान के इस वर्ष 500 पौधे वृक्षारोपण के दौरान रोपे गये, साथ ही 200 गमले ओर्नामेन्टल प्लाण्ट के तैयार किये गये हैं । उक्त वृक्षारोपण की विशेषता यह रही कि उक्त वृक्षरोपण में रोपे गये वृक्षों का सर्ववाइवल रेट 70 प्रतिशत रहा जो अपने आप में ही एक महत्वपूर्ण रिकार्ड है। प्राणी उद्यान के एन्वायरमेन्ट एन्रिचमेन्ट के लिये विगत वर्ष लगाये गये 400 पौधों में से लगभग 200 पौधे ऐसे थे, जो डेढ से दो वर्ष आयु के थे उक्त पौधों को आधुनिक तरीके से री–ट्रांसप्लांट किया गया। इस वर्ष प्राणी उद्यान में हरियाली हेतु समस्त केजों में वृक्षारोपण तथा

केज़ों के बाहर लगी रैलिंग के अंदर हरियाली हेतु हेज लगाई गई है। पर्यावरण संधारण के उक्त कार्य हेतु लगभग 18 लाख का ठेका वर्ष 2012 में दिया गया है जिस पर कार्य कराया जा चुका है तथा परिणामस्वरूप सम्पूर्ण चिडियाघर में हरियाली दर्शको का मन मोह लेती है।

रेन वाटर हावेंस्टिंग सिस्टम –

गांधी प्राणी उद्यान में सूखे की स्थिति को देखते हुये पानी की अनवरत सप्लाई को जारी रखने के लिये प्राणी उद्यान के कुंऐ तथा ट्यूववैलों का जलस्तर बढाये रखना अत्यंत आवश्यक हैं। इस आवश्यकता को देखते हुये प्राणीउद्यान में रेन वाटर हावेंस्टिंग सिस्टम लगाया गया। इसके लिये प्राणी उद्यान के नव निर्मित हॉस्पीटल की छत पर एकत्रित जल को फिल्टरेशन की प्रक्रिया से गुजारकर प्राणी उद्यान के कुंऐं में छोडा गया। प्राणी उद्यान के एन्क्लोजर निर्माण में भी रेन वाटर हावेंस्टिंग सिस्टम को सफल बनाने के लिये कच्चे , मोटेंड, एन्‍क्लोजर बनाये जा रहे हैं। जिनका उपयोग संग्रहित जल को चिडियाघर के कुंओ तथा ट्यूबवैलो का जल स्तर बढाने के लिये किया गया। उक्त व्यवस्था के अच्छे परिणाम प्राप्त हुये, उक्त व्यवस्था के किये जाने से लगातार दो वर्षो से अल्पवृष्टि के बाबजूद जल सप्लाई में कोई कमी नही आई।

शैक्षणिक गतिविधियां –

नवीन चिडियाघर नीति के अनुसार प्राणी उद्यान मनोरंजन का केन्द्र न होकर शैक्षणिक गतिविधियों के लिये उपयोग किया जाने वाला महत्वपूर्ण केन्द्र बना हैं। प्राणी उद्यान में प्रतिवर्ष वांलिंटियरों को प्रशिक्षण दिया जाता है । वर्ष 2007–2008 में 40 वांलिंटियरों को प्रशिक्षण दिया गया एवं दिनांक 12–04–2014 से 14–04–2014 तक पॉलीथिन के दुस्प्रभाव बिषय पर स्कूली छात्र छात्राओं हेतु विभिन्न शैक्षणिक प्रतियोगितायें आयोजित की गई । वन्य जीवों के विषय में जनसामान्य का शैक्षणिक ज्ञान बढाने के लिये प्राणी उद्यान के प्रत्येक वन्य जीवों के पिंजरे पर वैज्ञानिक, रोचक जानकारी से पूर्ण साइन बोर्ड लगाये गये। ग्रीष्मकालीन अवकाश, एवं साप्ताहिक अवकाश में प्राणी

उद्यान के वालिंटियर भावी प्राणी उद्यान में आने वाले दर्शको को घुमाकर वैज्ञाानिक जानकारी देते हैं। अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में वन्य प्राणी सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत सप्ताह भर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जावेगा तथा समापन अवसर पर जू–वॉक रैली निकालकर पुरस्कार वितरण किये गये।

पशु रोगों की देखभाल –

प्राणी उद्यान के पशु रोगो की देखभाल के लिये म0प्र0, उ0प्र0, राजस्थान, बिहार क्षेत्र का सबसे बडा पशु चिकित्सालय केन्द्रीय चिडियाघर प्राधिकरण के सहयोग से प्रारंभ किया गया है। पशु चिकित्सालय में एक पूर्णकालिक पशु चिकित्सक, दो पशु चिकित्सा सहायक पदस्थ होकर प्राणी उद्यान के पशुओ की नियमित देखभाल करते हैं। केन्द्रीय चिडियाघर प्राधिकरण से प्राप्त अनुदान रू0 5. 5 लाख से पशु चिकित्सालय का आधुनिकीकरण किया गया।

बीमारियो से बचाव के उपाय –

चिड़ियाघर में वन्य जीवों का बीमार पड़ना और उनकी मृत्यु होना एक सामान्य एवं प्राकृतिक प्रक्रिया है, फिर भी इनकी रोकथाम और रोगों से बचाव के लिये प्राणी उद्यान द्वारा निम्नलिखित उपाय किये जाते है :–

सफाई –

प्राणी उद्यान के मॉसाहारी वन्यजीवों के पिंजड़े प्रतिदिन साफ किये जाते है। सप्ताह में दो बार इनकी सफाई फिनाइल तथा सेवलोन से की जाती है। मॉसाहारी वन्यजीवों के मोट की सफाई साप्ताहिक रूप से की जाती है। चिडियाघर में वन्य प्राणियों के विभिन्न 75 हाउसिंगों की सफाई के लिये पूर्व में नगर निगम का अमला ही सफाई का कार्य करता था, उस समय प्राणी उद्यान में लगभग 80 सफाई कर्मचारी कार्य करते थे, फिर भी स्टाफ की कमी के कारण वन्य प्राणियों के एन्क्लोजरों में बदबू की शिकायत जनता द्वारा की जाती थी। परिणामस्वरूप विगत दो वर्ष से प्राणी उद्यान में सफाई का कार्य ठेके पर दिया गया, जिसके बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले। सफाई कार्य ठेके पर दिये जाने के बाद

जहॉ एक ओर निगम के स्थापना व्यय में कमी आई , वही चिडियाघर में आने वाले दर्शकों द्वारा सफाई कार्य की सराहना की गई तथा स्वस्थ वातावरण मिलने से वन्य जीवों की मृत्यु दर में तेजी से कमी आई। चिडियाघर में पूर्व से जो सफाई कर्मचारी पदस्थ थे , उनमें से वन्य प्राणियों के प्रति रूचि रखने वाले कर्मचारियों को एनीमल कीपर स्तर का प्रशिक्षण दिलाकर उनसे एनीमल कीपर का कार्य लिया जा रहा है। चिडियाघर को साफ–स्वच्छ रखने के लिये स्थान–स्थान पर अत्याधुनिक कूडे दानों की व्यवस्था की गई।

कृमिनाशण । डिवर्मिग।_–

चिड़ियाघर में वन्यजीवों की डिवर्मिंग निम्नानुसार की जाती है :–

क्र.	वन्यजीव	कृमिनाशण की अवधि	माह
1.	मांसाहारी	3 माह में एक बार	दिसम्बर, मार्च, जून, सितम्बर
2.	शाकाहारी	6 माह में एक बार	जनवरी, जुलाई
3.	पक्षी	3 माह में एक बार	जनवरी,अप्रैल,जुलाई,अक्टूबर
4.	बंदर	6 माह में एक बार	जनवरी, जुलाई

वन्यजीवों के आहार में वन्यजीवों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिये विटामिन व टॉनिक इत्यादि दिये जाते है जिसके लिये समय समय पर मल्टीविटामिन, मिनरल मिक्सचर, केल्शियम इत्यादि दिये जाते है।

ऐवियन इन्फलूंजा

नवम्बर 2016 मे चिडियाघर मे संरक्षित पेण्टेड स्टार्क मे एच 5 एन 8 संक्रमण के कारण सभी पेण्टेड स्टार्क की मृत्यु हुई, ऐवियन इन्फलूंजा की पुष्टी होने पर भारत सरकार की कार्य योजना 2015 का पालन किया गया तथा योजना मे निर्दिष्ट कार्यवाही कर परिसर को संक्रमण मुक्त किया गया।

PROPOSED REVISED LAYOUT PLAN OF GANDHI ZOOLOGICAL PARK ,GWALIOR

S.No.	MAMMALS	Enclosure Area (sq.m)
1	Sloth Bear	1082
2	Chinkara	1372
3	Common Palm Civet	215
4	Jackal	455
5	Leopard	794
6	Macaque Bonnet	567
7	Macaque Rhesus	500
8	Common Langur	529
9	Tiger (Bengal)	1241
10	Lion	1083
11	Black Buck	1521
12	Hippopotamus	1868
13	Deer Spotted	1521
14	Barking Deer	1575
15	Deer Sambar	1595
16	Porcupine	181
17	Rescue Centre	471

S.No.	REPTILES	Enclosure Area (sq.m)
1	Gharial	696
2	Crocodile	785
3	Cobra Indian	40
4	Monitor Lizard	40
5	Python Indian Rock	40
6	Russel Viper	40
7	Rat Snake	40
8	Common Red Sand Boa	40
9	Common Krait	40
10	Keelback Striped	
11	Keelback Checkered	40
12	Terrapins	40
13	Fresh Water Turtle	40
14	Soft Shell Turtle	40
15	Star Indian Tortoise	40

S.No.	BIRDS	Enclosure Area (sq.m)
1	Ostrich	500
2	Emu	500
	[illegible] BIRDS	
1	Pheasant Kalij	80
	Silver Pheasant	80
	Lady Amherst Pheasant	80
	Golden Pheasant	80
	Ring Necked Pheasant	80
2	Cockatiel	80
	Budgerigar	80
	Red Moustached Parakeet	80
	[illegible]	80
3	White Dove	80
	Ring Dove	80
	Green Pigeon	80
4	Parakeet Blossom Headed	80
	Parakeet Rose Ring	80
5	Parakeet [illegible]	80
	Parakeet Rose Breasted	80
	[illegible] Indian Bird	80
6	Peafowl Green	150
	Peafowl White	150
	WATER BIRDS	
1	Pelican Grey/White	300-500
	Painted Stork	
	Adjutant Stork	
2	Duck	
	[illegible]	
	RAPTOR BIRDS	
1	Vulture	80
2	Owl	80
3	[illegible] Eagle	80
4	Pariah Kite	80

■	EXISTING ENCLOSURES
	[illegible]
■	PROPOSED ENCLOSURES
	[illegible] ROAD
	SERVICE ROAD
	[illegible] WALL
	[illegible] PLANTATION
	[illegible]
	[illegible] AREA

PROJECT & CLIENT :-			CONSULTANTS:-	CONTENT OF SHEET			
GANDHI ZOOLOGICAL PARK, GWALIOR			ABHIKALP CONSULTANTS (P) LTD.	PROPOSED SITE PLAN			
			HIG 104, MADHAV NAGAR, GWALIOR (M.P.) 474 002 PHONE : (0751) 2020501, 2320716, 9425115101 FAX : (0751) 2320400	DATE	SCALE	REVISION	DRW. No.
					1:1000		

चिड़ियाघर का मास्टर प्लान

केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के सहयोग से इस चिड़ियाघर को आधुनिक वन्यजीव संरक्षण, संवर्घन एवं पर्यावरण शिक्षा के केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिये नया मास्टर प्लान बनाया गया है जिसके द्वारा 19 वीं शताब्दी की इस मेनीजिरी को 21 शताब्दी के वन्यजीव संरक्षण केन्द्र में तब्दील किया जाना प्रारंभ कर दिया गया है। वर्तमान में इसका विकास 1998 में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत नवीन चिड़ियाघर नीति के अनुसार किया जा रहा है।

1994–95 में गॉधी प्राणी उद्यान ग्वालियर का मास्टर प्लान बनाया गया जिसके मुताबिक प्राणी उद्यान में केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के निर्देश पर पुराने कैदनुमा पिंजड़ों को वन्यप्राणियों के प्राकृतिक आवास में बदलने के लिये एक पंचवर्षीय कार्य योजना तैयार की गई। उक्त कार्य योजना हैदराबाद के चिड़ियाघर डिजाइनर तथा केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के सलाहकार श्री पुष्प कुमार द्वारा तैयार की गई। प्रारंभिक तौर पर 1994 में उक्त कार्य योजना 2 करोड़ 11 लाख रूपये की स्वीकृत की भेजी गई जिसमें ग्वालियर चिड़ियाघर में पाये जाने वाले वन्यजीवों के अलावा कुछ विदेशी वन्यजीवों के प्रस्ताव भी भेजे गये। कार्य योजना को केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण द्वारा श्री पुष्प कुमार से संशोधित कराकर पुनः प्रस्तुत किया गया, चूॅकि प्रतिवर्ष निर्माण सामग्री के भाव में वृद्धि होती जाती है इसलिये मास्टर प्लान के विभिन्न चरणों को पृथक पृथक अनुमापन बनाकर स्वीकृति लेने की कार्यवाही प्रारंभ की गई।

मास्टर प्लान के प्रथम चरण में चिड़ियाघर की विस्तारित बाउॅड्रीवाल का निर्माण, सम्पूर्ण चिड़ियाघर में सीवरलाइन का निर्माण, विद्युत व्यवस्था में सुधार तथा चिड़ियाघर में एक अत्याधुनिक पशु चिकित्सालय के निर्माण का कार्य किया गया। उक्त कार्य 1998 में 29 लाख रूपये की लागत से पूर्ण किये जा चुके है। उक्त कार्य के लिये केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण ने 50 प्रतिशत अनुदान के रूप में 15 लाख

रूपये 2 किश्तों में प्रदान किये जिसमें इतनी ही राशि नगर निगम द्वारा मिलाकर पंजाब नेशनल बैंक सराफा बाजार में चिड़ियाधर का एक पृथक खाता खोलकर जमा किये गये।

मास्टर प्लान के द्वितीय चरण में वर्ष 1999–2000 में पेन्थर का एक एन्क्लोजर, बन्दरों के लिये 2 एनक्लोजर तथा देशी एवं हिमालयन भालू के लिये 2 एनक्लोजर बनाने का कार्य किया गया। उक्त कार्य के लिये केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण नई दिल्ली द्वारा रू. 50.50 लाख रूपये नगर निगम ग्वालियर को शत् प्रतिशत अनुदान के रूप में प्रदान किये। मास्टर प्लान के दूसरे चरण में ही केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण द्वारा वोल्फ तथा हाईना के एक एक एनक्लोजर का निर्माण तथा लॉयन व टाइगर के एनक्लोजर के विस्तार के लिये शत् प्रतिशत अनुदान के रूप में रू. 41.98 लाख रूपये स्वीकृत किये जाकर वोल्फ, हाईना तथा लॉइन तथा टाइगर एन्क्लोजर के केज का कार्य पूर्ण हो चुका हैं।

केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण ने निगम को निर्देशित किया कि है कि बड़े बनने वाले सभी एनक्लोजरों के लिये प्राधिकरण सभी शत् प्रतिशत राशि उपलब्ध करायेगा लेकिन निगम का भी साथ ही साथ छोटे छोटे एनक्लोजर बनवाने का कार्य अपने संसाधनो से करना होगा। उक्त निर्देश के पालन में मगर, घड़ियाल, मोर , ईमू , शतुरमुर्ग तथा पक्षियो के लिये अत्याधुनिक पिजरो का निर्माण नगर निगम द्वारा अपने व्यय से किया गया।

मास्टर प्लान के तीसरे चरण में चिड़ियाघर की दुर्लभ वन्यजीव चिंकारा, कृष्ण मृग, सियार, तथा हनुमान लंगूर के पिजरों के विकास का कार्य प्रारंभ कराया जा चुका है। इसके लिये केन्द्रीय चिडियाघर प्राधिकरण नई दिल्ली द्वारा रू. 60 लाख का शत प्रतिशत अनुदान स्वीकृत कर दिया हैं।

मास्टर प्लान के चौथे चरण में इटालियन गार्डन के बाद की मोतीमहल के ओर खाली पड़ी भूमि, जल विहार के तालाब और बैजाताल के मध्य की खाली पड़ी भूमि तथा इटालियन गार्डन के बगल में बारादरी की भूमि का उपयोग कर एक मछलीघर, एक सर्पघर तथा एक रात्रिचर जीवों का घर बनाना प्रस्तावित है। इसके निर्माण पर लगभग रू. 5 करोड़ व्यय आयेगा। यदि उक्त भूमि निगम द्वारा चिड़ियाधर को स्थानान्तरित कर दी गई है तथा केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के सहयोग से उक्त निर्माण कार्य कराये जा सकते है।

मास्टर प्लान के पांचवे चरण में प्राणी उद्यान में चेन्नई से प्राप्त शुतुरमुर्ग तथा नई दिल्ली चिड़ियाघर से प्राप्त ईमू के एन्क्लोजर का निर्माण प्रस्तावित था जिसे कियान्वित कर एन्क्लोजर का निर्माण किया गया तथा वन्य प्राणियों को शिफ्ट किया गया । इसी प्रकार हिप्पो एन्क्लोजर का भी निर्माण किया जाकर हिप्पो एन्क्लोजर में शिफ्ट किया जा चुका है।

गांधी प्राणी उद्यान का मास्टर प्लान अपने अंतिम चरण में है। ले आउट प्लान, कन्टूर सर्वे एनीमल कलेक्शन प्लान आदि का कार्य पूर्ण किया जा चुका है। मास्टर प्लान की कार्यवाही पूर्ण कर इसे स्वीकृति हेतु चिड़ियाघर प्राधिकरण नई दिल्ली को भेजा गया है तथा प्लान में सुझावो का समावेश कर स्वीकृति हेतु भेजा जा चुका है।

केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के अनुदान से चिडियाघर में हुये विकास कार्य

	मद	***राशि***
01.	अस्पताल निर्माण :–	
	सी.जेड़.ऐ. से प्राप्त अनुदान	8.75 लाख रूपये
		6.25 लाख रूपये
		कुल 15 लाख रूपये
	नगर निगम का अंशदान 50 प्रतिशत	15 लाख रूपये
	स्वीकृत राशि	30 लाख रूपये
	कार्य पर हुआ व्यय	29.71 लाख रूपये

02. हिमालयन एवं देशी भालू एन्क्लोजर निर्माण :–

प्राप्त अनुदान	12.09 लाख रूपये
स्वीकृत राशि	12.09 लाख रूपये
कार्य पर व्यय	12.90 लाख रूपये

03. पेंथर एन्क्लोजर :–

प्राप्त अनुदान	19.92 लाख रूपये
स्वीकृत राशि	19,92,000 रूपये
कार्य पर व्यय	11.77 लाख रूपये

04. बंदरों के एन्क्लोजर निर्माण पर व्यय :–

प्राप्त अनुदान	15.72 लाख रूपये
स्वीकृत राशि	15,72,500 रूपये
कार्य पर व्यय	16.23 लाख रूपये

05. व्हेटेनरी अस्पताल के उपकरण क्रय :–

प्राप्त अनुदान	02.77 लाख रूपये
कार्य पर व्यय	34,340 रूपये 2001 में
	64,620 रूपये 2002 में
कुल व्यय	98,960 रूपये

06. वुल्फ हायना एन्क्लोजर निर्माण :–

प्राप्त अनुदान	10.55 लाख रूपये
कार्य पर व्यय	10,62,621 रूपये

07. लॉयन एन्कलोजर का विस्तार :–

प्राप्त अनुदान	14.92 लाख रूपये
कार्य पर व्यय	10,,72,341 रूपये

08. टाईगर एन्क्लोजर का विस्तार :–

प्राप्त अनुदान	16.51 लाख रूपये
कार्य पर व्यय	कार्य पूर्ण है।

09. पानी समस्या हेतु ओवर हेड़ टैंक तथा बोरिंग :–

प्राप्त अनुदान	15.05 लाख रूपये
कार्य पर व्यय	कार्य पूर्ण।

10. जैकाल एन्क्लोजर निर्माण :–
स्वीकृत अनुदान 06.16 लाख रूपये
कार्य पूर्ण

11. चिंकारा एन्क्लोजर निर्माण :–
स्वीकृत अनुदान 17.65 लाख रूपये
कार्य पूर्ण

12. ब्लैंक वक एन्क्लोजर निर्माण :–
स्वीकृत अनुदान 16.03 लाख रूपये
कार्य पूर्ण

13. लंगूर एन्क्लोजर निर्माण :–
स्वीकृत अनुदान 15.75 लाख रूपये
कार्य पूर्ण

14. स्क्वीज केज निर्माण :–
स्वीकृत अनुदान 02.50 लाख रूपये
कार्य पूर्ण।

15. पशु चिकित्सा उपकरण :–
स्वीकृत अनुदान 02.86 लाख रूपये

16. परिसर मे केमरे लगाये गये।

इस प्रकार सी.जेड़.ऐ. से कुल अनुदान रू. 184.73 लाख प्राप्त हुये है, जो वन्य प्राणियो के एनक्लोजर निर्माण पर व्यय किये गये।

निगम व्यय से विकास कार्य

1.	मगर एनक्लोजर	पूर्ण
2.	घडियाल एनक्लोजर	पूर्ण
3.	इमू एनक्लोजर	पूर्ण
4.	मोर एनक्लोजर	पूर्ण
5.	पक्षियों के एनक्लोजर का आधुनिकीकरण	पूर्ण
6.	प्रवेश द्वार निर्माण	पूर्ण
7.	हिप्पो एन्क्लोजर	पूर्ण
8.	शुतुरमुर्ग एन्क्लोजर	पूर्ण

9.	पब्लिक यूटिलिटी सेण्टर	पूर्ण
10.	पर्यावरण संधारण	गतिशील
11.	टिकट विण्डो का कम्प्यूटीकरण	पूर्ण

प्रवेश शुल्क (टिकिट दर)

व्यस्क	20/–
विधार्थी	15/–
बच्चे (5 से 12 वर्ष)	05/–
विदेशी पर्यटक	50/–
कैमरा शुल्क	20/–

आय – व्यय

प्रवेश शुल्क से आयः–

वर्ष 2014–15	8024975/–
वर्ष 2015–16	9088075/–
वर्ष 2016–17	6181855/–

(नोटः–वर्ष 2016–17 मे बर्डफ्लू के कारण $3^{1/2}$ माह बन्द रहा जिसके कारण आय कम हुई।)

कैन्टीन से आयः–

वर्ष 2014–15	285000/–
वर्ष 2015–16	313500/–
वर्ष 2016–17	258640/–

खाना खुराक पर व्यय

वर्ष 2014–15	9101807/–
वर्ष 2015–16	9594669/–
वर्ष 2016–17	8735490/–

आधुनिकीकरण की यात्रा

1994 से पूर्व यह चिड़ियाघर मेनेजरी के रूप में संचालित था परंतु केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण से मान्यता प्राप्त होने के बाद 1994 से इस चिड़ियाघर के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के पूर्व चिड़ियाघर के जानवरों को छोटे–छोटे दड़वों रूपी पिंजड़ों में रखा जाता था, जहां न तो रोशनी की पर्याप्त व्यवस्था थी और ना हीं वन्यजीवों के नवजात शिशुओं को आवश्यक सुरक्षा की कोई व्यवस्था थी। परिणाम स्वरूप चिड़ियाघर के वन्यजीवों की मृत्युदर बढ़ती रही और 1994 में यह मृत्युदर लगभग 25 प्रतिशत् थी। केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण द्वारा निर्धारित मापदण्डों के अनुसरण करने के साथ–साथ चिड़ियाघर के वन्यजीवों को आधुनिक सुविधायें व प्राकृतिक वातावरण उपलब्ध कराने से उसके चमत्कारिक परिणाम देखने को मिले। इन सुविधाओं के तहत :–

01– सर्वप्रथम चिड़ियाघर के अन्दर एक आधुनिक वन्यजीव अस्पताल का निर्माण कराया गया। जिसके अन्दर 2 कानीवोर्स, बर्ड्स, प्राईमेट के लिये अलग–अलग वार्ड बनाये गये व जिनके साथ स्क्रीज केज संलग्न निर्मित हैं। साथ ही वन्यजीवों के उपचार के लिये एक ऑपरेशन थियेटर तथा वन्यजीवों के लगतार हेल्थ चेकअप के लिये एक प्रयोगशाला की व्यवस्था की गई है। 1997 में बना यह पशु चिकित्सालय न केवल म. प्र. के वन्यप्राणियों की दृष्टि से बल्कि प्रदेश के सभी चिड़ियाघरों, नेशनल पार्को, सेन्चुरी में सबसे बड़ा वन्यप्राणी चिकित्सालय है अपितु प्रदेश में लगने वाले राजस्थान, सीमावर्ती उत्तरप्रदेश के वन्यप्राणी उद्यानों में सबसे बड़ा पशु चिकित्सालय बना। पशु चिकित्सालय बनने के बाद चिड़ियाघर द्वारा वन्यप्राणियों की स्वास्थ्य की देख–रेख में आश्चर्यजनक सुधार हुआ।

02– 1997–98 में सर्वप्रथम चिड़ियाघर के तेंदुऐ, बोनट मंकी, रीसस मंकी तथा हिमालयन ब्लेक बियर के लिये अत्याधुनिक प्राकृतिक वातावरण युक्त एनक्लोजर्स का निर्माण कराया गया, परिणाम स्वरूप छोटे–छोटे दड़वे रूपी पिंजड़ों में रहने वाले तेंदुऐ जो आपस में लड़कर प्रतिवर्ष चिड़ियाघर की मृत्युदर को बढ़ाते थे तथा अब एक साथ खुले वातावरण में छोड़ा जाना सफल होसका। इसी प्रकार आधुनिक एनक्लोजर्स बन जाने से प्राईमेट ग्रुप के रीसस एवं बोनट मंकी को आधुनिक एवं प्राकृतिक वातावरण उपलब्ध होने से उनके बीच होने वाले झगड़ों के कारण होने वाली मृत्यु दर में चमत्कारिक कमी आई।

03– चिड़ियाघर में हिमालयन ब्लेक बियर जो अत्यंत संकुचित पिंजड़े में इसी अवधि में अत्याधुनिक एनक्लोजर्स में छोड़े गये।

04– 1999–2000 के दौरान चिड़ियाघर में मगर घड़ियाल के लिये अत्याधुनिक एनक्लोजर्स का निर्माण कराया गया। चिड़ियाघर में लगभग 20 वर्षो से मगर व घड़ियाल को स्थान की कमी होने के कारण प्रजनन की क्रिया नहीं हो पारही थी लेकिन नवीन एनक्लोजर्स में ट्रांसफर करने के पश्चात पहली बार चिड़ियाघर में मगर द्वारा अंण्डे दिये गये तथा सफलता पूर्वक चार बच्चों को जीवित बचाया जा सका।
05 प्राणी उधान में पूर्व में गिद्वो की संख्या नगणय थी परन्तु समय समय पर भीषण गर्मी के समय गिद्व शहर में गिरकर घायल होने की सूचना पर लगभग 10 से 12 गिद्व प्राणी उधान को प्राप्त हुये आज दिनांक को सारे गिद्व स्वस्थ है एवं अतिविलुप्त प्रजाति को संरक्षित करने के उद्वेश्य से आधुनिक सुविधाओं से सुसजित नवीन केज बनवाया गया है जिसमें समस्त गिद्वो को स्वच्छन्द विचरण करने हेतु छोडा गया है ।

06– 2001–2002 में लॉयन–टाईगर के पिंजड़ों का विस्तार का कार्य प्रारंभ हुआ। पुराने लॉयन के एनक्लोजर्स में एक बार में एक ही लॉयन को घूमने के लिये हाउसिंग में छोड़ा जाता था लेकिन अब नवीन एनक्लोजर्स में लॉयन टाईगर के केजेज को लगभग 6 गुना बढ़ा दिया गया है। इससे पूर्व टाईगर तथा लॉयन के एनक्लोजर्स में 1902 में बनी मांदनुमा हाउसिंग को समाप्त कर उसके स्थान पर अत्याधुनिक हाउसिंग का निर्माण कराया गया जिससे वन्यजीवों को संक्रामक बीमारियों से बचाने में सहयोग मिला। वर्तमान में चिड़ियाघर में लॉयन–टाईगर वुल्फ हाईना के पिंजड़ों का केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के मापदंण्डों के अनुसार अत्याधुनिक एनक्लोजर्स का निर्माण करया जा रहा है। उक्त निर्माण कार्य पूर्ण होजाने के बाद चिड़ियाघर में वन्यप्राणी संचरना अधिनियम के तहत सेड्यूल 1 एवं 2 के वन्यजीवों को अत्याधुनिक व प्राकृतिक वातावरण उपलब्ध कराया जावेगा। अगले दौर में सेड्यूल 1 वालों के शेष बचे चिंकारा कृष्ण मृग शियार व सर्पो के लिये अत्याधुनिक केजेज की व्यवस्था की जावेगी। चिड़ियाघर में किये आधुनिकीकरण के साथ–साथ चिड़ियाघर में वन्यजीवों का प्रतिवर्ष सघन स्वास्थ्य परीक्षण

की व्यवस्था की गई जिसके तहत सभी वन्यजीवों को नियमित डिबार्मिग, वेक्सीनेशन, रक्त परीक्षण, मल–मूत्रा परीक्षण के लिये स्थानीय पशु चिकित्सालय विभाग तथा पशु चिकित्सालय जबलपुर के वन्यजीव विभाग के सहयोग से 3 वर्षो से लगातार सघन स्वास्थ्य परीक्षण शिविर तथा वेक्सीनेशन शिविर लगाये जारहे हैं। जिसके अधोपरिणाम देखने को मिलेंगे। उपरोक्त व्यवस्थाओं से जो बातें सामने आईं हैं वह निम्न प्रकार हैं :–

01. चिड़ियाघर में वन्य जीवों की मृत्यु दर कम हुई ।
02. चिड़ियाघर में चिकित्सा व्यय कम हुआ ।

03. चिड़ियाघर के प्रति जनता में अच्छी छवि बनी परिणाम स्वरूप चिड़ियाघर की आमदनी 2005 में लगभग 12 लाख थी जो अब वर्तमान में 75 से 80 लाख प्रतिवर्ष हो गई है।

04. चिंकारा के पिंजड़ों में चिड़ियाघर में चिंकारा की प्लांट ब्रीडिंग करने के लिये कुछ मूलभूत परिवर्तन किये गये है जिसके तहत हाउसिंग बनाई गई जिसके तहत चिंकारा की ब्रीडिंग बढ़ी तथा चिंकारा के विनिमय में कानपुर, लखनउ, नई दिल्ली, रायपुर, नैनीताल, पूना चिड़ियाघरों को चिंकारे दिये गये उसके बदले में चिड़ियाघर को दूसरी प्रजाति के जानवर प्राप्त हुये।